Sri – Om
VEDIC MATHEMATICS AWARENESS YEAR

E-Newsletter Issue no 150 dated 03-04-2015

(Organizers Dr. S. K. Kapoor, Sh. Rakesh Bhatia, Sh. Bhim Sein Khanna, Sh. Deepak Girdhar, Sh. Gourav Budhiraja)

For previous issues and further more information visit at www.vedicganita.org

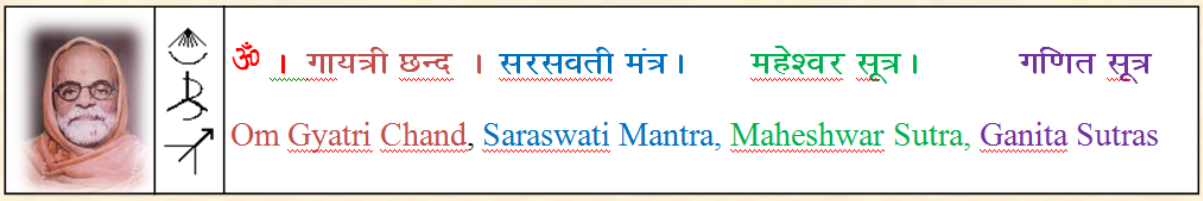

वैदिक गणित (सूर्य रश्मियो का गणित)	Vedic Mathematics (Sunlight format Mathematics)
I. देवनागरी वर्णमाला II. जड़ भरत III. वर्णो की उत्पति IV. पंचीकरण V. ज्योति व्यूह अंक VI. आ ब्रह्म् भुवन लोक VII बीज अक्षर VIII श्री ॐ IX देवनागरी लिपि X रेफ XI एक वर्णमाला से दूसरी वर्णमाला तक XII गणित सूत्रो का स्थापत्य आधार XIII आधा रेफ XIV गुरू व शिष्य शब्दो की संरचना	I. Devnagri alphabet II. Jad Bharat III. Creation of letters IV. 5 x 5 format V. Transcendental code value VI. Along organization format of elongated first vowel VII Seeds syllables VIII Sri Om IX Devnagrai script X Raif (letter: second Antstha) XI From one alphabet to another alphabet XII Sathapatya basis of Ganita Sutras XIII Half second antstha letter XIV Words formulations 'गुरू वा शिष्य' / Guru and Shisya
XV ज्योतिव्यूह मूल्य अंक कोषः	XV Transcendental code values dictionary
वैदिक गणित ज्ञान व तकनीकि विद्या प्रवेश के लिये ज्योतिव्यूह मूल्य अंक कोषः बहुत सहायक है।	Transcendental code values dictionary would be very helpful for initiation of knowledge and Discipline of Vedic mathematics, Science & Technology.
प्रत्येक साधक को स्वयं इस कोष को संकलित करना चाहिये तथा वह सभी शब्द जिनके बारे उसको जानकारी होती जाये वह उन शब्दो का अपने कोष मे अपनाता जाये।	Seeker of knowledge of this Discipline of Vedic mathematics, Science & Technology shall compile one's own Transcendental code values dictionary and go on including all such words in his dictionary for which one gets acquainted with.

जैसे जैसे कोष मे नये नये शब्द आते जायेगे वैसे वैसे ही इस विद्या का अनुशासन क्षेत्र बढ़ता जायेगा।	As the entries of this dictionary will go on expending, the acquirable knowledge field of Discipline of Vedic mathematics, Science & Technology as well would go on expend.
इसके लिये सर्वप्रथम देवनागरी वर्णमालो के वर्णो को उनके मूल्य सहित स्थान देना चाहिये।	As such one would start with, the individual Devnagri alphabet letters with their transcendental code values shall be given place in this dictionary.
इसको लिखने के लिये निम्नलिखित प्रकिया अपना लेनी चाहिये 'अ' = १, 'इ' = २, 'क' = १, ...	For such entries, following methodology may be adopted. 'अ' = १, 'इ' = २, 'क' = १, ...
यहा कुछ शब्दो को मूल्यो सहित लिखा जा रहा है। और इनका इस तरह से कोष मे स्थान दिया जा सकता है।	Here below are mentioned sub word entries and these may be given place in the dictionary.
ब्रहम् = २८,	ब्रहम् = २८,
ब्रह्माण = ४२,	ब्रह्माण = ४२,
ब्रह्मलोक = ४२,	ब्रह्मलोक = ४२,
ब्रह्मा = २६,	ब्रह्मा = २६,
शिवलोक = २६,	शिवलोक = २६,
विष्णुलोक = ३६,	विष्णुलोक = ३६,
गोलोक = २६,	गोलोक = २६,
ऋषि = १२,	ऋषि = १२,
देवता = २६,	देवता = २६,
छन्द = १६,	छन्द = १६,
स्वर = १५,	स्वर = १५,
मण्डल = २६,	मण्डल = २६,
अष्टक = १३,	अष्टक = १३,
अध्याय = १३,	अध्याय = १३,
सूक्त = १५,	सूक्त = १५,
वर्ग = १४,	वर्ग = १४,
अनुवाक = २३,	अनुवाक = २३,
ऋचा = ८,	ऋचा = ८,
अक्षर = १३,	अक्षर = १३,
वर्ण = १८,	वर्ण = १८,
आकार = ८,	आकार = ८,

इकार = ६, उकार = १०, ऋकार् = ११, ऌकार् = २३, रेफ = १६ फकार् = १३, म्कार् = १६, ऋक् = ५ यर्जु = ११ साम = १५ अथर्व = १७ संहिता = ३० वेद = २० घन = १४ अनघ = १५ बिन्दु = २६	इकार = ६, उकार = १०, ऋकार् = ११, ऌकार् = २३, रेफ = १६ फकार् = १३, म्कार् = १६, ऋक् = ५ यर्जु = ११ साम = १५ अथर्व = १७ संहिता = ३० वेद = २० घन = १४ अनघ = १५ बिन्दु = २६
इस तरह से कोष मे नये नये शब्दो को मूल्यो सहित जोड़ते जाना चाहिये।	Like that new entries shall be given place in the dictionary alongwith transcendental code values of the words.
इसके पश्चात स्थापत्य मापदण्ड के अनघ सोपान आयामो के मान के अनुसार मूल्य अंको के साख्य के समांतर योग स्वरूपो के ज्योमिति आधार तक पहुंचना चाहिये। ऐसा करने से वैदिक संहिताओ के संगठन के गुण विशेषो की पकड की जा सकती है। और इस पकड के आधार पर वेद विद्या क्षेत्र मे सही रूप से प्रवेश किया जा सकता है। ऐसे प्रवेश से वेद विद्या क्षेत्र के तेजोमय स्वरूप को आत्मसात किया जा सकता है। *	Thereafter one shall tried to reach at geometrical basis parallel to the numbers values of the entries by following the Sathapatya measuring rod as per its synthetic components (hyper cubes) set ups. With this, comprehension can be had of the organization features of Vedic samhitas. And with such comprehension one can properly initiate for the Discipline and knowledge of Vedic mathematics, Science & Technology. By such initiation one can attain enlightenment of the order of soul. *
…क्रमश ०३-०४-२०१५ डा. सन्त कुमार कपूर	…to be continued 03-04-2015 Dr. Sant Kumar Kapoor